वृत्तपत्राचे नांव :– नई दुनिया
वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :– भोपाळ
वृत्तपत्र पान क :– 14
दिनांक :–07/06/2008

वेद माता गायत्री

गायत्री से ही सभी वेदों की उत्पत्ति हुई है, इसलिए इसे वेदमाता कहा गया है।

गायत्री से ही सभी वेदों की उत्पत्ति हुई है, इसलिए इसे वेदमाता कहा गया है। गायत्री की उपासना में 24 अक्षरों वाले महामंत्र का जप किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस मंत्र का प्रत्येक अक्षर 24 देवताओं की शक्ति का संक्षिप्त रूप है...

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उपासना में गायत्री की साधना

शास्त्रों में उल्लेख है कि ब्रह्मा के तप से गायत्री और सावित्री प्रकटीं। गायत्री और सावित्री दोनों ब्रह्मा की पत्नियां मानी गई हैं।

गायत्री के तीन स्वरूप

देवी भागवत में गायत्री की तीन शक्तियों को ब्राह्मी (ब्रह्मणी), वैष्णवी और शाम्भवी (रुद्राणी) स्वरूप में बताया गया है। प्रातःकाल के समय कुमारी (ब्राह्मी) स्वरूप होता है। इसमें गायत्री का वाहन हंस होता है। उनके पांच मुख हैं। भुजाएं दो हैं। दोपहर के समय युवती (वैष्णवी) का स्वरूप माना गया है। इस रूप में वे गरुड़ पर विराजमान रहती हैं। उनका मुख एक और भुजाएं चार है। सायंकाल का स्वरूप प्रौढ़ा (रुद्राणी) हैं। इस रूप में बैल उनका वाहन रहता है। इनका भी एक मुख और चार भुजाएं हैं।

को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। गायत्री को देवी के रूप में भी पूजा जाता है। वस्तुतः यह एक प्रकार की ईश्वरीय चेतना है, जिसे वेदमाता कहा गया है। गायत्री से ही सभी वेदों की उत्पत्ति मानी गई है। धर्मग्रंथों में भी इसका उल्लेख है।

गायत्री जाह्नवी चोभे सर्व पाप हरे स्मृतो।
गायत्रीच्छन्दसां माता माता लोकस्य जाह्नवी।।

अर्थात्- गायत्री और गंगा दोनों ही पापों को नष्ट करने वाली हैं। गायत्री वेदमाता और गंगा लोकमाता हैं।

नास्ति गंगासमं तीर्थं न देवः केशवात् परः।
गायत्र्यास्तु परं जायं न भूतो न भविष्यति।।

अर्थात्- गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं है, कृष्ण के समान कोई देवता नहीं और गायत्री से श्रेष्ठ जप करने योग्य कोई मंत्र न हुआ है और न होगा।

गायत्र्येव परो विष्णुर्गायत्र्येव परः शिवः।
गायत्र्येव परो ब्रह्मा गायत्र्येव त्रयी ततः।।

अर्थात- गायत्री ही विष्णु, शिव और ब्रह्मा है। अतः गायत्री से ही तीनों वेदों की उत्पत्ति हुई है।

गायत्री की उत्पत्ति

गायत्री जी की आरती

आरती श्री गायत्री जी की।
ज्ञान को दीप और श्रद्धा की बाती,
सो भक्ति ही पूर्ति करै जहं घी की।। आरती
मानस की शुचि थाल के ऊपर,
देवि की जोति जगै जहं नीकी।। आरती।।
शुद्ध मनोरथ के जहां घंटा बाजे,
करै पूरी आसहु ही की।। आरती।।
जाके समक्ष हमें तिहु लोक की,
गद्दी मिलै तबहुं लगे फीकी। आरती।।
आरति प्रेम सों नेम सो जो करि,
ध्यावहि मूरति ब्रह्म लली की।। आरती।।
संकट आवैं न पास कबौ तिन्हें,
सम्पदा और सुख की बनी लीकी।
आरती श्री गायत्री जी की।

गायत्री का अर्थ

गायत्री का मतलब गान या जप करने वाले की रक्षा करने वाली। अर्थात्- यह गायन (जप) करने वाले व्यक्ति की रक्षा करती है। इसलिए इसे गायत्री कहा जाता है। गायत्री वेदों और ब्राह्मणों की माता है। वह गान (जप) करने वाले द्विज का त्राण (रक्षा) करती है, इसलिए गायत्री कही जाती है।

गायत्री का विज्ञान

गायत्री के 24 अक्षरों के तत्व क्रमानुसार पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, गंध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द, वाक्य, पैर, मल, मूत्रेंद्रिय, त्वचा, आंख, कान, जीभ, नाक, मन, बुद्धि, अहंकार, चित्त और ज्ञान है। वैज्ञानिक खोजों से पता चला है कि इन 24 अक्षरों का संबंध शरीर में स्थित 24 गंथ्रियों से रहता है। मंत्र के उच्चारण से शरीर में स्थित नाड़ियों में प्राण शक्ति का स्पंदन शुरू हो जाता है और पूरे शरीर में आक्सीजन का संचार बढ़ जाता है।

गायत्री की उपासना और साधना

गायत्री की उपासना साकार अर्थात् प्रतिमा पूजन के रूप में भी की जाती है। पूजा के लिए एक चौकी पर गायत्री की प्रतिमा स्थापित करें। पूजा के लिए समय, धूप, दीप, नैवेद्य, फल,-फूल आदि का उपयोग करें। साधना निराकार रूप में की जाती है। इसे मानसी पूजा भी कहते हैं। इसके लिए सूर्य का चित्र अथवा दीपक या अग्नि को सामने रखें। इस दौरान गायत्री मंत्र जपने का महत्व है।